International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(4): 94-96

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(4): 94-96
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-04-2021
Accepted: 05-06-2021

Dr. Gauri Bhatnagar
Assistant Professor/Officiating Principal in Shri Durga Mahila Mahavidayalya, Tohana, distt Fatehabad, Haryana, India

Corresponding Author:
Dr. Gauri Bhatnagar
Assistant Professor/Officiating Principal in Shri Durga Mahila Mahavidayalya, Tohana, distt Fatehabad, Haryana, India

प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में संस्कृति तत्त्व मीमांसा" में वैदिक संस्कृति

Dr. Gauri Bhatnagar

शोध सार :-
किसी साहित्य की महानता सर्वप्रथम उसकी विषयवस्तु के मूल्य एवं महत्त्व में तथा उसके विचारों की उपयोगिता में निहित होती है, परन्तु इसके साथ ही आवश्यक है कि किसी संस्कृति की आत्मा और जीवन को अथवा उसके जीवन्त एवं आदर्श मन को उसकी किन्हीं महत्तम अथवा अत्यन्त संवेदनशील प्रतिनिधि आत्माओं की प्रतिभा के द्वारा प्रकट करने में किस सीमा तक सहायक होता है। वैदिक साहित्य इस कसौटी पर खरा उतरता है । वेद आर्य संस्कृति तथा सभ्यता के आधार हैं । वेद मानव मात्र के लिये वह दिव्य ज्योति है, जिससे आलोकित मानव को अपने सच्चे कर्मपथ का ज्ञान होता है। अतः मनु ने वेदों को सर्वज्ञानमय, समस्त विद्याओं का आधार तथा आदि स्रोत माना है। वेदों के द्वारा ही प्राचीन भारतीय जीवन दर्शन, कार्यकलाप, आचार-विचार, नैतिक एवं सामाजिक व्यवहार का ज्ञान होता है। यह युगों-युगों से प्रवाहित होने वाली वह पवित्र अक्षुण्ण ज्ञान गंगा की धारा है, जो अनेक संक्रमण - व्युत्क्रमणों को पार करती हुई आज भी प्रवाहित हो रही है तथा जिसमें अवगाहन कर मानव हृदय को परम विश्रान्ति की प्राप्ति होती है।

कूट शब्द: प्राचीन संस्कृत, वैदिक संस्कृति, विषयवस्तु के मूल्य

प्रस्तावना

वेद स्वरूप मीमांसा

वेद शब्द 'विद् ज्ञाने' धातु से घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है- ज्ञान या जानना। इसके अतिरिक्त 'विद् सत्तायाम् 'विद् विचारणे', 'विद्ऌ लाभे', 'विद् चेतनाख्यान्- निवासेषु इन धातुओं से भी घञ् प्रत्यय करने पर वेद शब्द निष्पन्न होता है। वेद ज्ञान की वह राशि है, साहित्य का वह भण्डार है; जिसका प्रादुर्भाव अनेक शताब्दियों में ऋषियों की अनेक पीढ़ियों द्वारा हुआ है। भारत के प्राचीन मनीषियों ने विश्व के आध्यात्मिक चिन्तन विषयक चिरन्तन तत्त्वों को ही वेद में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार वेद शब्द प्राचीन ऋषियो-महर्षियों ऋषियो- महर्षियों द्वारा सर्वप्रथम दृष्ट 'ज्ञान' का वाचक है। आचार्य मनु ने वेद को सभी प्रकार के ज्ञान से युक्त [1] कहा है। तात्पर्य यह है कि हमारे जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है, जिसका दर्शन वेद में न होता हो । तीनो लोक, चारों वर्ण, चारों आश्रम यहाँ तक कि भूत, भवत् और भविष्यत् सभी का ज्ञान वेदों के द्वारा संभव है । [2]

इस प्रकार वेद प्राचीन काल से ज्ञान की एक पवित्र पुस्तक के रूप में आदृत है। यह अन्तः स्फुरित कविता का एक विशाल संग्रह माना जाता है।

साथ ही उन ऋषियों, दृष्टाओं तथा सन्तों की कृति माना जाता है, जिन्होंने अपने मन द्वारा कुछ गढ़कर बनाने के स्थान पर एक महान्, व्यापक, शाश्वत तथा अपौरुषेय सत्य को अपने आलोकित मनों के अन्दर ग्रहण किया और उसे मंत्र का रूप दिया तथा जिन्होनें ऐसे शक्तियुक्त मंत्रों को प्रकट किया, जो किसी साधारण नहीं अपितु दिव्य स्फुरण तथा दिव्य स्रोत से आये थे। इन ऋषियों को कवि का नाम दिया गया, जिसका अर्थ है- 'सत्य का दृष्टा। वेदों में भी वर्णित है- 'कवयः सत्यश्रुतः"[3] अर्थात वे दृष्टा जो दिव्य सत्य को श्रवण करने वाले थे तथा स्वयं वेद को श्रुति नाम से अभिहित किया गया, जिसका अर्थ साक्षात्कृत् (अन्तः श्रुत) धर्म पुस्तक हो गया। जैसा कि श्रुति शब्द से ही विदित है- 'श्रवणात् श्रुतिः' अर्थात् जो सुनने योग्य है वह श्रुति है।

वेद-वाणी कल्याण-रूपा है, वह मानव हित- साधिका है और मानव मात्र के लिये है। अन्य शास्त्र वेदानुकूल होने पर ही प्रमाणिक माने गए हैं। वेद विद्या का आगम ऊँ पद से है। यह प्रणव अ उ म तीन मात्राओं द्वारा व्याख्यायित होता है। वेद त्रयी कहलाती के 'अ' रूप से ऋक्, 'उ' रूप से यजुः और 'म' रूप से साम का सम्बन्ध है। इन्हीं से 2/4 और स्वः तीन महाव्याहृतियों और तीनं लोकों का जन्म हुआ। समस्त वाद इन्हीं तीन को लेकर प्रवृत्त हुये हैं। अतः यह विद्या सर्व वादों से अविरोध रखती है। ईश्वरवाद, जीववाद, प्रकृतिवाद अथवा ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड, भक्तिकाण्ड, जैन धर्म के सद्भाव, सद्ज्ञान, और शुभाचरण अथवा एकवाद, द्वैतवाद, त्रैतवाद इसी विद्या से उत्पन्न हुये हैं।

वेद चार हैं- ऋग्वेद, चजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद ऋग्वेद की शाखायें 21 यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1000 और अथर्ववेद की 9 थीं। इन 1131 शाखाओं में मूल चार संहितायें सम्मिलित हैं। चार वेदों को दो-दो भागों में विभाजित किया गया प्रथम संहिता या मंत्र और द्वितीय ब्राह्मण जिसके द्वारा मनन किया जाये वह मंत्र है। इस तरह मंत्रों में विभिन्न देवताओं का आह्वान तथा स्तुतियाँ की गई हैं। ' वृ' धातु से निष्पादित ब्राह्मण शब्द का अर्थ है-विस्तार । अर्थात जो मंत्रों का विस्तार करें, वे ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।

इसके अनन्तर ब्राह्मण ग्रन्थों के भी दो उपविभाग हो गये आरण्यक और उपनिषद् | आरण्यक ग्रन्थों में आध्यात्मिक तत्त्वों की मीमांसा की गई है। इन ग्रन्थों का अध्ययन नगर से दूर अरण्य में किया जाता था, अतः इनकी संज्ञा आरण्यक हुई। उपनिषद् शब्द उप तथा नि उपसर्गपूर्वक सद् धातु के योग से बना है, जिसका अर्थ है विशरण, गति और अवसादन अर्थात् उपनिषद शब्द का अर्थ है, जिसके अनुशीलन से अविद्या नष्ट होती है, संसार के दुःख शिथिल होते हैं और अन्ततः ब्रह्म की प्राप्ति होती है। गुरू के समीप बैठकर प्राप्त किये गये रहस्य ज्ञान को भी उपनिषद कहा जाता है।

ऋग्वेद के अनुसार होता ऋचाओं का पोषक, उद्गाता शक्करी छन्दों में साम का गायक यज्ञ की मात्रा तथा माप करने वाला अध्वर्यु यजुर्वेदी तथा यज्ञ का निरीक्षक बह्मा अथर्ववेदी होता है। [4] ऋचायें छन्दोमयी है, उनकी अक्षर संख्या नियत है, पर यजुर्वेद के मन्त्र अनियता क्षरावसान हैं। साम प्रायः गेय ऋचात्मक है और अथर्व दोनों प्रकार का है उसमें गद्य भाग तथा छन्द भाग दोनों हैं।

चारों वेदों में ऋग्वेद सबसे बड़ा है। यह अष्टक क्रम तथा मण्डल क्रम इन दो रूपों में विभक्त है। अष्टक अध्यायों और वर्गों में विभक्त हैं तथा मण्डल अनुवाक और सूक्तों में समस्त ऋग्वेद में 8 अष्टक 64 अध्याय और 2006 वर्ग हैं मण्डल की दृष्टि से उसमें 10 मण्डल, 85 अनुवाक और 1028 सूक्त हैं, जिनमें वालखिल्य नामक 11 सूक्त भी सम्मिलित हैं। ये सूक्त अष्टम भण्डल में संख्या 49 से 59 तक हैं। इनमें 80 मंत्र है। इन मंत्रों को छोड़कर ऋग्वेद 12000 वृहती छन्दों के परिमाण का है।[5] वृहती छन्द में 36 अक्षर होते हैं अतः ऋग्वेद के समस्त अक्षरों की संख्या 432000 है। ऋग्वेद के समस्त मंत्रों की संख्या 10580 है। ऋग्वेद की शाकल शाखा ही वर्तमान में प्रचलित है। अन्य शाखाओं में वाष्कल, आश्वलायन, शाखायन तथ माण्डूकायन के नाम विशेष प्रसिद्ध हैं। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है। ऋग्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ हैं-ऐतरेय तथा शाखायन एवं उपनिषद हैं- 'ऐतरेय तथा शाखायन, आरण्यक ग्रन्थ है तथा ऐतरेय तथा शाखायन एवं उपनिषद हैं।

ऋक् तथा साम से भिन्न गद्यात्मक मंत्रों की संज्ञा यजुष कहलाती है। इसके दो विभाग हैं- शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद याज्ञवल्क्य द्वारा आख्यात है। इसे वाजसेनयि संहिता भी कहा जाता है। शुक्ल यजुर्वेद संहिता मात्र है। इसकी दो शाखायें है माध्यन्दिन शाखा और काण्व शाखा माध्यन्दिन शाखा में 40 अध्याय 303 अनुवाक और 1975 मंत्र हैं। काण्व शाखा में 40 अध्याय 328 अनुवाक 2086 मंत्र हैं। शुक्ल यजर्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ हैं- शतपथ ब्राह्मण, आरण्यक ग्रन्थ है, वृहदारण्यक तथा उपनिषद हैं ईशावास्योपनिषद तथा वृहदारण्यकोपनिषद कृष्ण यजुर्वेद में संहिता तथा ब्राह्मण भाग का सम्मिश्रण है। इसकी 86 शाखाओं का उल्लेख मिलता है, किन्तु इनमें 4 ही शाखायें उपलब्ध हैं- तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ तथा कपिष्ठलकठ कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ हैं तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ तथा कपिष्ठल ब्राह्मण, आरण्यक ग्रन्थ हैं- तैत्तिरीय तथा मैत्रायणी एवं उपनिषद हैं- कठोपनिषद, मैत्रायणी उपनिषद, तैत्तिरीयोपनिषद तथा श्वेताश्वतरोपनिषद् | यजुर्वेद के मंत्रों में मुख्य रूप से विभिन्न यज्ञों की विधियाँ

बताई गई हैं अतः यह ग्रंथ कर्मकाण्ड प्रधान है। इसका उपवेद धनुर्वेद है।

सामवेद में यज्ञ, अनुष्ठान और हवन के समय विभिन्न स्वरों में गाये जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इस प्रकार यह वेद वैदिक युग की गान - विद्या का परिचायक है। इसमें 1875 मंत्र हैं, जिसमें 1504 मंत्र ऋग्वेद से संग्रहीत हैं। इसके दो प्रधान भाग हैं- पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक पूर्वार्चिक में 6 और उत्तरार्चिक में 9 प्रपाठक हैं। पुराणों में सामवेद की 1000 शाखाओं के संकेत हैं, किन्तु वर्तमान में इसकी मात्र तीन शाखायें प्राप्त होती हैं कौथुमीय, राणायनीय और जैमिनीय। जिन पर सामगान गाये जाते हैं, उन ऋचाओं को 'सामयोनि' कहा जाता है। सामगान चार प्रकार के हैं वेयगान अरण्यगान, अहगान तथा अह्मगान उहगाान तथा ऊह्यगान । प्रथम दो का सम्बन्ध पूर्वार्चिक के तथा शेष का सम्बन्ध उत्तरार्चिक के मंत्रो से है सामगान के पाँच विभाग होते हैं। प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव तथा निधन | इन गानों को प्रस्तोता, उद्गाता तथा प्रतिहर्त्ता सब-साथ मिलकर गाते हैं। सामवेद से सम्बन्धित ब्राह्मण हैं-पंचविश, षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, देवताध्याय, छन्द, तवलकार संहितोपनिषद् और वंश ब्राह्मण, आरण्यक ग्रन्थ हैं तवलकार तथा छान्दोग्य आरण्यक एवं उपनिषद हैं । छान्दोग्योपनिषद तथा केनोपनिषद | इसका उपवेद गांधर्ववेद है।

अथर्वशब्द अहिंसा वृत्ति द्वारा मन की स्थिरता प्राप्त करने वाले व्यक्ति का बोधक है। अथर्ववेद का ज्ञाता ब्रह्मा यज्ञ का प्रमुख ऋत्विक् है । अथर्ववेद को ब्रह्मवेद, अंडि रावेद, सुवेद, गं आथर्वाङ रसवेद, सोमवेद भी कहते हैं। इसमें एक ओर आयुर्वेद, अभिचार, मोहन आदि विद्यायें हैं तो दूसरी ओर गंभीर आध्यात्म विद्या भी है। इसकी नौ शाखाओं का उल्लेख मिलता है पिप्पलाद, शौनक, मौदमहाभाष्य, स्तौद, जाजल, जलद, ब्रह्मवेद, देवदर्श तथा चारणवैद्यशाखा । इसमें 20 काण्ड, 731 सूत्र तथा 5987 मंत्र हैं। इसके कुन्ताप सूत्रों को खिल माना जाता है। अथर्ववेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ हैं- गोपथ ब्राह्मण, आरण्यक ग्रन्थ कोई नहीं है एवं उपनिषद् ग्रन्थ हैं- प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद तथा मण्डूक्योपनिषद । अथर्ववेद का उपवेद अर्थवेद या शिल्पवेद है।

वेद भारतीय सभ्यता का मूल आधार हैं। यद्यपि वेद के चारों खण्ड़ों का मूलभूत श्रुति - प्रकाश चार आदि ऋषियों की अन्तः प्रज्ञा में हुआ था और फिर ब्रह्माण्ड में व्याप्त हो गया में था परन्तु फिर वैदिक मंत्रों का शब्द सौष्ठव विभिन्न ऋषियों द्वारा प्रणीत हुआ । वास्तव में वैदिक मंत्र ऋषियों की आध्यात्मिक प्रगति के साधन थे । इन ऋषियों ने वैदिक ज्ञान को अपात्र से गुप्त तथा दुर्गम रखना चाहा। इस कारण वेद में अनुभूतियों पर आधृत रहस्यवाद, प्रतीकवाद तथा रूपकों का प्राचुर्य है।

संधर्व सूची

1. सर्वज्ञानमयो हि सः ।
   मनुस्मृति 2 / 7
2. चातुर्वर्ण्य त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् ।
   भूतं भव्यं भविष्यं च सर्व वेदात् प्रसिध्यति ।।
   वही 12 / 17
3. ऋग्वेद 5/57/8, 6/49/6
4. वही 10 / 70 / 11
5. शतपथ ब्राह्मण 10/ /4 / 2 /23